शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

नागरी लिपि ओर विनोबा

हिंदुस्तान की मुख्य समस्या राष्ट्रीय एकता की है। भिन्न-भिन्न प्रांत अलग होने की बात करते हैं। सौराष्ट्र विरुद्ध गुजरात, विदर्भ विरुद्ध बाकी महाराष्ट्र, उत्तर बिहार विरुद्ध दक्षिण बिहार, ऐसे एक-एक प्रांत के भी टुकड़े हैं। इस प्रकार अलग हो, बराबर अधिकार मिलें, राष्ट्रपति की जरूरत नहीं, इत्यादि-इत्यादि बातें चलती हैं। इस सबका मतलब यह है कि भारत की एकता खंडित होने जा रही है। इस हालत में सारे भारत को जोड़ने वाली एक ही चीज है, जो मदद दे सकती है, वह है नागरी लिपि। नागरी लिपि के आधार से समग्र एशिया में एकता हो सकती है। पर प्रथम तो भारत में हो। इस वास्ते अभी उसके चिंतन की खास आवश्यकता है। दूसरे लोग उसका खास चिंतन करते नहीं। देवनागरी लिपि के लिए विशेष चिंतन की जरूरत है। मेरे मन में आता है कि हिंदुस्तान में इंग्लिश भी नागरी लिपि में छपे। 'सरमन आन दि माउंट' जैसी कोई एक छोटी किताब छापी जाये। वह नमूने के तौर पर होगी। मुख्य बात तो मेरे मन में यह आती है कि इंग्लिश डिक्शनरी नागरी में छपें। नागरी के क्रम से शब्द दिए जाएं। अकारादि क्रम। ब्रेकेट में अंग्रेजी की स्पेलिंग दें। आज 'न्यूमोनिया' में शब्द 'पी' में है, वह नागरी में 'न' आएगा। आज साइकोलाजी में 'पी' है। नोइंग में 'के' है। ऐसी अव्यवस्था है। अगर नागरी में डिक्शनरी होगी तो व्यवस्था होगी। हमारी सभी भाषाओं की प्रमुख किताबें और पत्रिकाएं नागरी में भी छपे, बाबा का यह जो विचार है, आंदोलन है वह कोई बाबा का खब्त नहीं है, यह क्रांतिकारी आंदोलन है। भारत को जोड़ने वाला आंदोलन है। ख्यात साहित्यकार अनंत गोपाल शेवड़े के साथ चर्चा करते हुए विनोबा जी ने कहा "इन दिनों मैं नागरी के पीछे पागल हूं। यूरोप में एक ही रोमन लिपि है, इसलिए वहां कामन मार्केट बन सका। मैं जब कालेज में पढ़ता था तब मेरा एक विषय फ्रेंच था। वह मैं बीस-पच्चीस दिन में सीख गया, क्योंकि रोमन लिपि जानता था। फ्रेंच की वही लिपि है। लिपि मुझे सीखनी नहीं पड़ी। हिंदुस्तान की सब भाषाएं में जानता हूं, लेकिन वे सीखते हुए मेरी आंखें कमजोर हो गईं। - आधी दृष्टि खत्म हुई। क्योंकि इतनी भिन्न-भिन्न लिपियां सीखनी पड़ीं। लिपि भेद के कारण परस्पर एकता होने में कठिनाई होती है। इस समय देश की स्थिति तो ऐसी है कि चिंता होती है कि कहीं हर प्रदेश अधिक सत्ता की मांग करते हुए स्वतंत्र बनने की तरफ न जाए। संस्कृत भाषा या देवनागरी लिपि दक्षिण वालों के लिए अरुचिकर होगी, ऐसा मानना भ्रम है। अरुचिकर हो सकती है गलतफहमी के कारण। लगता है देवनागरी लिपि और हिंदी भाषा एक ही है, कारण हिंदी भाषा की लिपि नागरी है। देवनागरी का हिंदी के साथ कुछ भी संबंध नहीं है। मराठी, हिंदी, संस्कृत, अर्धमागधी, पाली ये सारी भाषाएं देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं। संस्कृत, अर्धमागधी, पाली ये तीन प्राचनी और हिंदी, मराठी और नेपाली ये तीन अर्वाचीन। देवनागरी लिपि यानी हिंदी भाषा की लिपि है नहीं। नागरी को हिंदी लिपि मत कहो, वह संस्कृत लिपि है। लोग यह जानेंगे तब नागरी को मानेंगे।

(कुसुम देशपाण्डे, विनोबा की सन्निधि में) (1969-1975)